

II-215 घमरुत वज्राचार्य सुख श्री महाबिहार



ॐ नमः श्रीवराहमहरोषणाया ॥ स्वहृत्पद्मचन्द्रादित्यस्थनीलरुंकारोत्पलवस्मि  
कंफरित्वाशरीरसंशोधिः त्रिभुवनव्याप्यअकनित्यं यावत् ॥ तत्रावस्थितश्रीवराहम  
हरोषणामानीयपुरतो नमशिः दृष्ट्वास्मिपुष्पादिरूपेणाविभावा ॥ ॐ वज्रकुश  
ज ॥ ॐ वज्रपाशकी ॥ ॐ वज्रफोटवा ॥ ॐ वज्रवेशहो ॥ ॐ पूष्यन्याश ॥ ॥ ईददि  
लोकपातो ॥ पंचोपचारपूजा ॥ नाः श्याः घः स्तु ॥ ॥ विष्णोर्भोजदिनेशमहादत्तगतं  
रुंकारवीजात्मवाङ्मयभिः परिपीडिताधरपरंघोरदृष्टासपरं ॥ ५ ॥ वामं पश्चि  
राजिनदक्षिराकरं प्राशांकसप्येतं वन्दे श्रीवराहमहरोषणमहाक्रोधं मुदाहं  
सदा ॥ नमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं वराह रूपे चट २ प्रचट २ कह २ प्रसृ २ य २ प्रस्फा २ य २ हन  
२ प्रसरं वं २ जन्मये २ क्षमये २ मोहये २ सर्वशत्रुणां मुखवन्धनं कुरु २ सर्वडाकिनी  
नां ग्रहभूतप्रेतपिशाचव्याधियेषाणां नाशये २ मरु २ मारु २ रु २ रुच २ रुच २ रुच २  
हा वराहमहरोषणमाज्ञापयति ॐ वराहमहरोषणं कुरु ॥ जा ॥ वतिमानो ॥ ॥



ॐ नमः श्रीवज्रमत्यायः ॥ ॐ नमः श्रीचण्डमहारेवरः ॥ ३ ॥ ॐ नमः श्रीचण्डमहारेवरः ॥ अज्ञा  
ॐ चण्डमहारेवरः सर्वनाथानिर्देशयनिर्विघ्नं फलवन्नाथ उवाच ॥ नमः ॥  
रुद्रात्मनस्तंज्यायाये ॥ ॥ भावयेद्विष्णुपञ्चमूर्त्यै स्वकृपाशया ॥ नमो ॥ तयोर्निर्गितं ध्यामा  
तद्वैर्षवज्रा ॥ स्वरूपतारवक्रावगु ॥ कौसव्यवामेपालसप्तचिती ॥ तज्जन्तातज्जलक  
अष्टतोष्टतिनपीडरा ॥ सप्रहारपदसव्यचतुर्भारविमर्दनी ॥ वामेमुष्मीधृजानुर्विकेकला  
संनयानके ॥ वसुधातज्जलकं च वामजानुप्रतिस्थिता ॥ अक्षोभ्यकृतमोक्षमानीतः  
रत्नाकिरितिना ॥ पंचवीरिजना ॥ रिकः सर्वालीका ॥ मृषितो ॥ विरष्टवर्षीका ॥ चरुतचक्षुष्य  
विभ्रामावमेस्थीरचितेनसिद्धो ॥ चण्डमहारेवरः ॥ सर्वभूताश्रीचण्डमहारेवरः ॥ भाव  
येता ॥ ॥ भद्रपुष्पायासा ॥ ॐ श्रीचण्डमहारेवरः ॥ परिवा ॥ सलितः ॥ आज्ञा ॥ २ ॥ ॐ  
हो ॥ अत्रप्रणमते अधिस्थानं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॐ रुद्राचलवज्रपुष्पप्रतिच्छेद  
कुरु कुरु स्वाहा ॥ मध्ये ॥ ॐ ध्येताचलवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ श्री  
ताचलवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ दक्षिणे ॥ ॐ रुद्राचलवज्रपुष्पप्रतिच्छेद  
कुरु स्वाहा ॥ पश्चिमे ॥ ॐ शमानाचलवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ उत्तरे ॥

ॐ द्वेपवज्रीवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ मध्ये ॥ ॐ मोहवज्रीपुष्पप्रतिच्छेद कुरु  
स्वाहा ॥ आने ॥ ॐ पिशुनवज्रीवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ नेमते  
॥ ॐ भृगुवज्रीवज्रपुष्पप्रतिच्छेद कुरु स्वाहा ॥ वायुये ॥ ॐ ईश्वरीवज्रीवज्रपुष्पप्रति  
च्छेद कुरु स्वाहा ॥ ईशाने ॥ ॥ पुष्पादिर्गतवार्धूर्पगंधनेवेधमेवच ॥ पूजा ॥ पंचोक्त  
चारु ॥ कथं हि नरादलस्य हि ॥ यदा ध्येताचलमध्यमोहवज्रीममचि ॥ तमेव नरादल  
जेयमेव जीताचलादिकं ॥ पंचमेगी प्रमेदेन पंचमरादलकल्पने कथं हि कथं चितेन ॥  
पूर्वमेवाकृतसमष्टा ॥ मरादलीपरिवर्तेवज्रयोगिनीयोगसंभूते भावयेत्सद्यमलेश्वपन  
यचमुदमुदः ॥ ॥ ॐ आसर्वतथागा ॥ निषेकसमयश्रीयस्तु ॥ मुकुटाभिषेका ॥ ॐ चण्डम  
हारेवरः ॥ आविष्ट ॥ २ ॥ अस्य हृदयं फल ॥ धनजापयाया ॥ ॐ हुन ॥ नारय ॥ २ ॥ सर्वशत्रून्ना  
नरवक्रं फल ॥ स्वकृपाभिषेका ॥ ॐ ॥ २ ॥ फल ॥ सर्वशत्रून्ना ॥ नृपाशरावध ॥ २ ॥ महासप्तमेध  
भते स्वाहा ॥ पाशाभिषेका ॥ ॐ हे श्रीमगवतु ॥ दयाचलासिद्धिर्विच्छेद ॥ ततः पूर्वपद  
भिरिवचन ॥ सर्वसाधन्यकृपादिवराभेदेन पञ्चाचला नारायणभिषेका देय ॥ भुजिष्या



मिरेवैकधाया॥ ॐ भगवति अविश २ अस्या हृदया हूं फुट् ॥ देवी आवाहन जापा ॥ ॐ कर्त्तव्ये  
सर्वमा ॥ ॐ मास कर्त्तव्य २ हूं फुट् ॥ कर्त्तव्य ३ त्पत्ति ॥ ॐ वज्रं कपाल सर्व शत्रूणां रक्तं वा ह्ये  
२ हूं फुट् पात्र उत्पत्ति ॥ ॐ हे श्री देव वज्री सिद्धिः त्वं हूं फुट् ॥ धर्मत्रय संध्या लपनं  
पसिन्दुल नयन मंत्र ॥ ह्रीं ॥ हृदय मंत्र विनियोगः ॥ हूं हृदये मंत्रः ॥ मे गिरिणी मंत्रः ॥ ॐ  
पञ्चयोगिनी हूं फुट् ॥ मूल मंत्रः ॥ ॐ प्रज्ञा पाणिने हूं फुट् ॥ विनियम मूल मंत्रः ॥ ॐ  
वो हे रि हूं फुट् ॥ तृतीया ॥ समस्त साधनया यन्त्रक्या जुता ॥ ॥ ध्यु ॥ कर्त्तव्यं वज्रं कर्त्तव्यं  
सुलपाशवत्त्रयं ध्वजः पुस्तक ध्वजः पञ्चवाजा ॥ ध्वजे समस्त साधनया यन्त्रक्या ॥ ॥ ज्वर २  
आदि देव के लुत्तुला ॥ गीध वदन्ता ॥ हृड किमिच्छायां च ॥ देवादि देवदायसि ॥ धर्म  
समस्तानां नलि विनयादी ॥ मनुष्य मधं फोला ॥ शक्ति सिद्धतां ॥ पिता नया साखात  
सिं ॥ गोरि चोरि ध्याता ॥ किनीया मे लनी ॥ राम काम देव के ॥ लता ॥ धर्म मर्त्या ॥ मनुष्यया का  
यी ॥ वामु फो आदि रूपत्वा ॥ नलि ॥ ह ॥ शक्ति सादिनया ॥ अध्ये स्या नलि ॥ श्री देवी ओ गल  
सि ॥ मजा आदि देवदायसि ॥ ध्वजे समस्त साधनया यन्त्रक्या ध्युता ॥ ॐ ध्वज  
महाविष्णु आ गच्छ २ अमुक मे साधये हूं फुट् ॥ उदये के लुत्तुला ॥ मका मे मका

सर्वपापनाशनमथ नमो जपे पापनाशजुषु ॥ रक्षन्ती ॥ ध्वनतर्तु सर्वमयनासजुषु ॥  
 डाकिनीयामयेव युवे तल ईकाः प्रकाः च्यातः नाल धा १०८ जप तर्पे ज्येदिगर्त होत  
 सर्वडाकिनीनां ताडये रथ नत न होला प्रछोये ॥ डाकिनी विलेपन्य ॥ वालो नो रथ रथ  
 नतना ब्रह्मसं पुये रथ जुषु ॥ देवदत्त मुश्च व्यः ध्वनतर्तु रमका वयानो जर्पे वल  
 धा लुखाडुते होला छोटः प्रलय उच्च ॥ नत जुषु वा अमुक मुहो गना शय ॥ ध्वनतर्तु रम  
 लखापा नगा ले रोगनाश ॥ देवदत्त लखि रमा शय ॥ धनतर्तु थको रपु मे यल ला ये ज  
 ला ॥ वशी करण प्रतिमा चो या व वा मज गुन वल्य जप या य अमुक देव समाने य  
 ध्वनतर्तु जपे न स्प जुषु ॥ पुष्टि मे कृत् ॥ ध्वनतर्तु जप या वेध न नुने पयुषा ॥  
 सर्वज्वलेना सया ॥ धनतर्तु चो ल्पैः रसा विये ज्वलेना रजुषु ॥ हित धा ममिः गो चो चन  
 ईना तल सतर्पे म हनि कयेः ध्वनतर्तु उते ति ये मीत्रा लोका कार्ता मुख वल्य वन्धये र  
 ध्वनतर्तु वीना ववने मेवने भरवन् ॥ लिहल न तित सा लो क वल्य ॥ नाग केशर  
 मिनी गराज साधये या य जप तर्पेः हो वल क्लमो ल्पैः आका सल स्वया हने न शि घुव  
 क्षमयति ॥ ध्वनतर्तु जपे प्रागप्य ॥ सर्व वात दृष्टि लो मय ध्वनतर्तु आकाश सकोठ तलो



स्वेयं वा फलदियुक्ता प्रथममाला मंत्रन केतकी या हलसचोर्ध्वः हाक कानिचिन्म  
 शिरसः पतिसः गलसकोरवायसमदनाशुभु ॥ ॥ द्वितीयमाला मंत्रन आगीजाका  
 स्पर्शो धनजाप धा १०८ यायेभि न वेलासन के पुगुका र्थथाये डुमिदुजुया ॥  
 ॐ वो हरी अमुकी मआया नु हू फद ॥ धर्मत्रन जे गुनमः स्विधा वः खवत्ता तिमता  
 कपुस्ते धार १०८ जप याये पुस्तन धा गु पलपूः पकानमिसाया तही वे प्र धवस्या त्रीन  
 धा न ईको जप पुस्तन धा त हो ले पुस्तन वस्या ॥ वरवज पुसा हि जुया ॥ वसत जपे तेलसासक  
 सनार्पे पित्रि जुया चिजपन के तो के सतस्ये न क सावस्य जुया ॥ ॥ धर्मत्रन धा १००० जप  
 वसाया सनरि वपन मे स्येन कोरवाल सास जुया ॥ ॥ मूर्धन्य स्वर्ण जप याये गो लमाना मन्या त वस  
 वस्य ॥ ॥ धर्मत्रन जप लपे मड त्या म नरि वपन नि स्ये कोरवाये न ड जुया ॥ ॥ कोरवा सये चारि वपन  
 नि स्ये धर्मत्रन जप लपे कोरवा तसा कोरव जुया ॥ मिजयासनः धर्मत्रन जप लपे कोरवाल सा पुस्तन ३  
 जुया ॥ मिसाया सकार्थ्य धर्मत्रन जप लपे कोरवाल सा मिसा जुया ॥ ॥ धर्मत्रन जप लपे नाम  
 का से मिसा यन हलथये वस्य जुया धर्मत्रन गुगुयाना मकार्थ्य या त उ गुमिदुजुया ॥ ॥  
 ॐ चरा म हा रो वरा इ म वली ॥ ६२ अमुक कार्थ्य मे साधये हू फद ॥ धर्मत्रन धा १०८ पलपी  
 सर्व ड पड वः मयः याधिः विभः कार्थ्यः नाम भूतः प्रेतरा सता धर्मत्रन सतसा नि जुया ॥

प्रथममाला मंत्रः मृग पत्रसः पदा ह १६ लया दथु सध्वमाला मंत्र स मस्तचोर्ध्वः हाक  
 कानि विनाव कोरवाय के ॥ लपर सा गो रो च न र क च द न चो ये जे हा ॥ ॥ दला स र्मत्ररा  
 पका चि क न ज पा व धा १०८ वोर्ध्व ध्व चि क न न यो ती ल व ये मुचा म फ नै व य धा ल स पा  
 त साने ला क ॥ ॥ ॐ चरा म हा रो वरा इ ई विद्या मृत मे क हू हू फद ॥ धर्मत्रन स मस्त वा स  
 ल जये ॥ ॥ कली कपे पुस्तन ये जप लपे धा १०८ भु क व द्य ये जुया ॥ जप लपे काष्टि वृष  
 उ व न ये भु क व द्य ॥ ॥ ध्ये ल कलित स्ये विकाल या प्रा स न अ क चु न द ॥ जप लपे तो  
 ने ला पुत्र ॥ ॥ अ वः हा मो स म मा ग रा नि स्ये ध्ये ल कलित स ध्व वा स उ ला व ज प ल प न के जो  
 म न व द्य ॥ ॥ अ वः हल नै ध्या यः पि पि म ले ध्व ते स म मा ग न नि स्ये कष्टि स पु ने जप लपे हि  
 १११ के ला ३ त ध्व ते न का सर्व रो दि ना स जुया ॥ ॥ ह ला या हा क तु व नि स्ये क पा ल स पा ये  
 मो ल स्या क ला पुत्रा ॥ ॥ पा ल सा पिः त ध्यो य मे स र वा नः ध्व ते चा क ति ल त स्ये तो ने लि ध्ये ति  
 फ ला पु न का भ दाय क स्ये तो न के कि मि ना सा ॥ ॥ के त कि हा व सि गु लिः सि ह न चि क न व न  
 ति ल के सि म्वा क ॥ ॥ ला लि का या हि पे नः पु न द या व प का चि क न स रु ७ फि ना त स्ये पु य म  
 ग ति ग स स म जुया ॥ ॥ अ ल लः सो ध न नि स्ये मो ल स पा ये मो ल स्या क ला पुत्रा ॥ ॥ चो ल  
 स या चो ला या चो सि ह व ह ल स थ ना न का रो ग ना स ॥ क द क पि पिः अ वः हल वि ह



ल. ध्वतेपितालमडुधनायमहनि कल्पे डले वसु रोगनाला ॥ कट्कपिपीवनस्यै ॥ सर्वा छि रोग  
 नाशा ॥ किपिपुनईतालमताय कलिसवुलात्रमहनि कया व डले ॥ १ ॥ आधनाला ॥  
 अलतिः सिडतिः धालेपतिः हामिववनाला ॥ १७ ॥ मसिया हावान ॥ नातस्यै प्राकि लसि  
 का ॥ ॥ लिंयापुः प्रियं गुरु च दुनः कृतः सय रोगनासका कल्पे तोनो ॥ ॥ मेसयाधो  
 लिं उलावाः विजिवनस्यै अनिसाहाला ॥ ॥ कट्कोर निवोमले चाकु वुधिः वोगतस्यै  
 धेतलनमावः तोनके ग्रहनीनाशा ॥ ॥ पालुजिलतिचिः ध्वते कालवसनस्यै तोनेभीहिना  
 यवा ॥ ॥ नेभागावः साखवतो नानैला वजिलः चाकु वनस्यै कलः वातलायुवा ॥ ॥ हना  
 वुठेनस्यै आस्रवाननाला ॥ ॥ इवसिया खोला हनु ध्वते निस्यै पायो ॥ कट्टनाला ॥ ध  
 तेवाललनरिविचानः न्याकयाः धातुमुवयसिमसालावा ॥ ॥ चाकु कटवचनदाल्यै चाकु  
 सः पुनानस्यै मुमुवगनाला ॥ वुधिः चाकु वनस्यै सभस्तले रमनाशा ॥ ॥ कट्ककसि  
 वसर्वा सिरोगनाला ॥ ॥ चाकु धेतवनस्यै मातापित्तले वक्रादीलायुवा ॥ ॥ धेतचाकुन  
 स्यै विकालया अकहल गिहल पुननिस्यै तोनात्रा विकाललायुवा ॥ ॥ डुडुपिपीपुं ध्ये  
 लकलिसतस्यै तोनके ज्वल नुगलस्यै ककासरोगनाला ॥ ॥ नुवुअपराजितायाहा ॥ सुक

[illegible]



हितसमय २५: ३ सर्वपानियशोधय २ हं फुट् ॥ धर्मनजापवा १००० यास्य कोव  
 नआकाशस्यस्युपे ॥ सुवाफलमवयके ॥ ॥ ॐ फुट् कारु २ ह २ हा २ फुट् ॥  
 २ मशा नलवेनसजपथा १००० पायनिविद्या ॥ ॥ ॐ सर्वविद्याधिपतेपरजन्मत्रना  
 सनेसर्वडाकितीनांवा २ म २ वन्ध २ मुखकीलय २ ह २ फुट् ॥ ग्रानम २ पुनेवेनस  
 धर्मनयोनावन्नेसर्वमयना २ ॥ ॥ ॐ हिलि २ ह २ चरा २ महारोष ॥ हं फुट् लसवी  
 नगुचाकास्यधर्मत्रधानुपतपैसप्ययाहोलेविस्मयतिव ॥ ॥ ॐ ममा २ धर्मननुवाज  
 हजपलपैडथहोले: व विस्मयतिव ॥ ॥ ॐ वेडुआ २ थै तनैधा २ जपतपैह ॥  
 या ॥ धर्महोलेकालेविस्मयतिव ॥ ॥ ॐ तेलिआ २ धर्मतधवा २ जपलपैडथहोले  
 ॥ जामेसविस्मयति ॥ ॥ ॐ हों वज्रकनाथच ॥ २ महारोष ॥ हं फुट् ॥ धर्मनवापप  
 पलपैदेपाचोलापचित्तयेनकलोहतनतिने ॥ पिचाविस्मयतिव ॥ ॥ ॐ यमान  
 कही: स्त्री: हं ३ फुट् ॥ सय २ धर्मनैधा २ पलपैलसचोका ॥ होलेमेसविस्मय  
 तिवा ॥ ॥ ॐ जममदनेमर्दय २ धर्मनैधा २ हजपलपैपापरा २ जुवनास ॥ ॥ ॐ  
 धनेमेकोधनेमेदनाय: हं फुट् ॥ धर्मननधा १००० जपलपैलसचोका ॥ होलेमेसविस्मय

ॐ संज्ञासनमोहनाय हं फुट् ॥ धर्मनत्रधा १०० जपलपैचसुपोलयासगधिसिध: आत्म  
 रसा ॥ ॥ ॐ अचलेसंचलेअमुकस्यमुखकीलये हं फुट् ॥ खिति याप्येनगुधिक २ त  
 लिदयके ॥ धर्मनाहालिसहेलधालन ॥ वल्लुवस्य ॥ खालचोये ॥ नेडुवाना ॥ पलाक  
 धासचोलेजापधा १००० यायधनथवस्वांतरव १ सी छुंवायम ॥ ॥ ॐ सर्वमा  
 भंजनं अमुकस्यपादोकीलये हं फुट् ॥ ॥ पाया ॥ धर्मनावर्जत्रकोवा ॥ तये: गति ॥ अति  
 सिद्धोचनास ॥ ॥ ॐ जय २ ५ ॥ जयनिजितियने: हि २ हा २ स्फोटय २ ३ धादय २ शीघ्रि  
 कर्मफुट् २ चरा २ महारोष ॥ हं फुट् ॥ ॥ २ मशा १ या १ वल्लसधर्मनत्रधाये ॥ हाकि १ हिते  
 शीलस ॥ लपति ॥ ललकोरवाये ॥ जपेधा १००० मंत्रधर्मा ॥ जन्मगेला ॥ ॥ ॐ धेपनेधेपवज  
 अमुकेनविदेवय ॐ चक्रा २ महारोष ॥ हं फुट् ॥ ॥ २ म २ हलसखिवात्वा कथासचो  
 नधुनकावरेदिपा १ दुलासनिमपिचाया ॥ लुपावे ॥ धर्मनत्रधा १० पलपैवलया १ ५ ३  
 नेहालावधोये ॥ वयासेलकल १ ५ ॥ ॥ ॐ विलिमिलिलिते हं फुट् ॥ ॥ धा २ १ वोहं  
 १ मेमिखा ॥ स्थाकनास ॥ ॥ ॐ छी १ छी १ छी १ शोरवये २ धा १ वन्ध २ स्वरा २ महारोष ॥ हं फुट्  
 १ सायाकोचल १ हल १ अ १ गि १ निहायकी १ लज्जानाव १ धा १ १०० पलपै लाया १ लालतये



६

ध्येते नसाया इडम वयुलिका ॥ ५८ ॥ ॐ ध्येते ॥ ५९ ॥ ध्यात्वा हिविखं चरुपि निखः ॥ ६० ॥  
 लः ॥ ६१ ॥ वरुडमहासेना ज्ञापयति स्वाहा ॥ ६२ ॥ यस्तलाये धा ॥ ६३ ॥ जर्पुयो ॥ ६४ ॥ मेकोरिगुर्विहो  
 हं हः ॥ ६५ ॥ पाया ध्येते सर्वविखनासा ॥ ६६ ॥ नमो वैतरगा यमे विसेहलोचसी स्वाहा ॥  
 ध्येते नसाया ॥ ६७ ॥ जपलपरेन निखास ध्यायेति स्वाहा ॥ ६८ ॥ ॐ नमो वैतरगा यमे विसेहलोचसी स्वाहा ॥  
 ते लोः ॥ ६९ ॥ रक्ष ॥ ७० ॥ स्वाहा ॥ ७१ ॥ ध्येते नसाया ॥ ७२ ॥ जपलपरेन निखास ध्यायेति स्वाहा ॥ ७३ ॥  
 ॥ ७४ ॥ नमो वैतरगा यमे विसेहलोचसी स्वाहा ॥ ७५ ॥ जपलपरेन निखास ध्यायेति स्वाहा ॥ ७६ ॥  
 प्रसमनी स्वाहा ॥ ७७ ॥ ध्येते नसाया ॥ ७८ ॥ जपलपरेन निखास ध्यायेति स्वाहा ॥ ७९ ॥  
 पोचिनचे नावकायः मास छव्वर्धोले स्वीधतुः सिः हलजोला हा ध्येते कला  
 छिहा कयका पतसु थने इता ल निला वमत च्या ये सकले ध्या रवन इया ॥  
 ॐ का कनू छिनि देवर्त का के नमः पय स्वाहा ॥ ८० ॥ अं पा हलस को रव्या गुगय हि  
 कया ववया पा पुन चोया वगो ह्यया वि हाथानस पुना वत ले वल मा ग को रवन मा  
 यु ॥ ८१ ॥ तिष्ठ पुन ह्यया वपुये ॥ ८२ ॥ नय मेते वा धो ग कना स ॥ ८३ ॥ सिखा हा पा ऊ प्र  
 मर्पति निधा विधये गुया ॥ ८४ ॥ पुष्प नक्षेत्र पुन का ये के त की मोल स न ये स्व गुहया

६

हन लो हा सविये ॥ ८५ ॥ नय मेते वा धो ग कना स ॥ ८६ ॥ सिखा हा पा ऊ प्र  
 ७८ ॥ ॥ करवीर पूषा ॥ ८७ ॥ नमो पुन अज्ञा ॥ ८८ ॥ पुन छ क रा ड रे हं ॥ ८९ ॥ स्वाहा ॥ जाप  
 प अगुः धुगुः ना के कतः सिद्ध हायः इ ड जो ध्वज सभ भाग शानि ल्पे ज प त प म लु  
 क स फये वन जलाभा ॥ ९० ॥ प्रथम माला पात्रा ॥ ९१ ॥ ॐ हं हं हं ॥ ९२ ॥ ॐ हं हं हं ॥ ९३ ॥  
 नमः सर्वासा परिपुके म्भा ॥ ९४ ॥ ॐ हं हं हं ॥ ९५ ॥ नमः सर्वासा परिपुके म्भा ॥ ९६ ॥  
 वत्राट अमोघ वराड महा रोष रास्यो द्य हं ॥ ९७ ॥ नमः ५२ हं ॥ ९८ ॥ ॐ हं हं हं ॥ ९९ ॥  
 प्रजावर्द्धनीः ज्वल र मेधा वर्द्धिनीः धिरि वृद्धि वर्द्धनी स्वाहा ॥ १०० ॥ योगिनी यामाता मेत्रा ॥  
 ॐ हं अहो गणे स्वराय महा विघ्न निवा ह्याय विस्फो द्य २ अका त मृत्पु हन २ वज्र हस्ते  
 न छिन्धि २ परशु हस्ते न भिन्धि २ अहो २ ॥ १०१ ॥ धिपति आ ॥ १०२ ॥ छ स ज्ञान म त य स्वाहा ॥  
 ॐ गं गं गं गं गं ॥ १०३ ॥ ॐ फ्री ज्ञा ॥ १०४ ॥ ॐ हं हं हं ॥ १०५ ॥ ॐ हं हं हं ॥ १०६ ॥  
 म सर्व विघ्ना धि पा य सर्वार्थ सिद्धि दा व न मः स्वाहा ॥ १०७ ॥ ॐ हं हं हं ॥ १०८ ॥  
 सिद्धि शक्तिः गं गं गं गं गं ॥ १०९ ॥ ॐ हं हं हं ॥ ११० ॥ ॐ हं हं हं ॥ १११ ॥



[illegible]

ॐ आयमनं प्रति कृत्वा ह ॥ ॐ नमो भगवते श्री चण्ड महारौषणाय देवासुर मनुष्या  
नाशन कराय सकलमाजविद्या शानकराय अतिसिद्ध सुख पुष्टे रत्नमकुतेशिरसि  
ईदं बलि गृह्ये मम सर्व विघ्नां हन २ चण्ड मा रान् निवारये २ नाशये २ भ्रामके  
ह २ भिन्द २ नाशये २ तापये २ शोषये २ छेदे २ भेदे २ इष्टमन्त्रान् मम विरुद्धक  
चिक्ताका तुभस्मी क्रूररक्तं फट् स्वाहा ॥ पंचोपहा पूजा मुनि ॥ ॥ के कराक्षं  
महाद्यौरं रत्नमेनी बिभूषितं ॥ स्वर्गपाश धां वींतु मामि चण्ड रोषणां १ शुता  
क्षरा ॥ थमार्याणां ॥ ॐ चण्ड महारौषणा मम रक्षे २ रक्तं २ फट् २ महाक्रोध रक्तं  
दि २ स्फोटये २ रक्तं स्वाहा फट् फट् ॥ स्वात जप पात्र ॥ यमपोत दुये आत्मर  
था ॥ ॐ रक्तं वज्रांगेम मरक्ष २ रक्तं फट् स्वाहा ॥ थ आत्मरथा ॥ इति अक्तावरा किंधि ॥  
पात्र काया वृक्ष लक्षणः पंचगव्य पंचामृत पंचपद्म पंचगंध तिर्थ त्वं वधने



सिद्धे ॥ मंत्र ॥ ॐ आरूं ॥ धूपतये ॥ ॐ सर्ववृद्धाकिनीये पात्रमधिकसेत्वा  
 हा ॥ सर्वतथागतपात्राधिकारं सेत्वा हा ॥ ॥ रुक्मचन्दनषट्कोणावोयाव  
 रूंवां ॥ वीजतये ॥ स्नानयेये ॥ ॐ ह्रावजुकरोटकाय हूं ॥ ॥ ॐ सर्व  
 देवताविनामृतधारे स्वाहा ॥

येकाव अर्चनस्ये भो स्वामि भो प्रभुधक हाताव गागल पोत स तयाव  
 त्रयकाव थ्येन कलवनं थन श्रीमहादेवनं सति देवीन सियकोलाजिके  
 गलपाव हासतंधानं हेनारुद्राधिधक छत्रयागुज्याजिन सियाध  
 मथ्येखलहायमते थन जिनफचिकं जुतनयुत सकले छत्रमामस तिदे  
 आमसियागुखलहानायाज्यामदुधकंधायाव नारदमुनिमुमुकं योनं  
 थनंलि सति देवीन श्रीमहादेवयारखातश्च यावधानं हे स्वामि परम  
 गुलं त्वायमयेल छलपोतयातमचात त्वाकलु कयारवमुमाल

गुणः  
 ३५



धनवधनसिवशक्तिजुयावन्त्यानादजातं धनमाहृन्मयिनजज्ञेया  
 सिभालपलं ध्वमुखजक्षपजापतिनजो. महादेववोनिवमखुन. धन  
 न. गथेयायधकं थथोजिनमहादेवसात कनवनसा. जक्षपजापतिन  
 नंजा. धनजितसाजियायिव ह्वथथोजिन. महादेवकन. मवनथा  
 तसमाचारद्वयकं मकंधक. जित. धुनिदुयायिव. वनेगथे. चेतनेगथे.  
 मतस. अंरोतजुयाव. धंदाकयावन्त्यान. धनंतिभालपलं. यथायथेथ.  
 वस्पन. जिनमहादेवकनवनेधकंभादपावन्त्यान. थयमादको क्रियाक.